दया और प्रेम के गौरवमयी 100 साल

अजायब बानी

मासिक पत्रिका

अक्टूबर-2026

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब ❁ बानी

वर्ष–चौबीसवां | अंक–छठा | अक्टूबर–2026

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह महाराज
संगत का असर 3

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से बचपन की एक यादगार दास्तान
मौत का रहस्य 15

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
प्यार और भरोसा 22

किड्स कॉर्नर
महात्मा रविदास जी और मीरा बाई जी 30

पजल कॉर्नर
मैं कौन हूँ? 32

प्रकाशक : सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर-335 039 जिला-श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04
संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा 99 50 55 66 71 उप संपादक : नन्दनी सहयोग : सुखपाल कौर

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 295 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

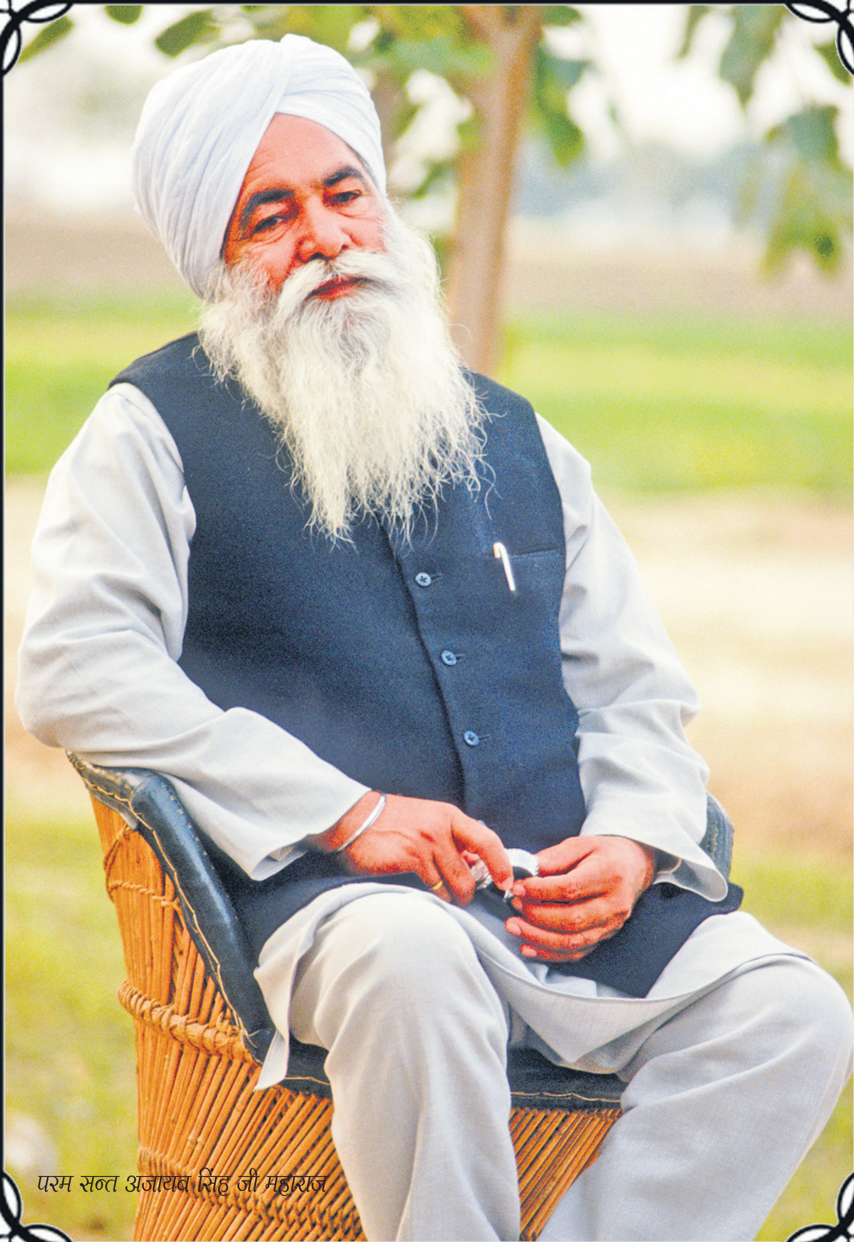

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह महाराज

संगत का असर

DVD-575(4)

09 जून 1995 हुजूर स्वामी जी महाराज की बानी कोलम्बिया

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने गरीब आत्मा पर रहम किया, अपनी भक्ति और यश करने का मौका दिया। सन्त-महात्मा मालिक के प्यारे किसी भी युग, किसी भी समाज, पूर्व-पश्चिम या फारस के देशों में पैदा हुए लेकिन कोई भी महात्मा नई समाज बनाने के लिए नहीं आए और न ही पहले की बनी समाज तोड़ने के लिए आए हैं। कोई भी महात्मा हमारे हाथ में डंडे देकर लड़ाई-झगड़ा करवाने के लिए नहीं आते।

वे मालिक के प्यारे बेशक देह करके हमारे बीच मौजूद नहीं लेकिन उनकी लेखनियां जो उन्होंने काफी मेहनत करके लिखी थी, वे लेखनियां हमारे पास मौजूद हैं। हम उनकी लेखनियां पढ़कर देख सकते हैं कि उनमें किसी के लिए नफरत है या प्यार है? आप किसी भी महात्मा की बानी खुले दिल और खुले विचार से पढ़कर देख लें, हर महात्मा की बानी में चार चीजों की महिमा होती है। वे चार चीजें हैं- जप, तप, पूजा, पाठ करने से मुक्ति नहीं, मुक्ति नाम में हैं।

वे महात्मा यह भी बताते हैं कि जिस नाम में मुक्ति है, वह नाम इन आँखों से देखा नहीं जा सकता, इन कानों से सुना नहीं जा सकता। वह बिना लिखा कानून है बिना बोली भाषा है। जुबान होने के बावजूद हम गूंगे हैं, आँखें होने के बावजूद हम उस नाम को देख नहीं सकते। कान होने के बावजूद हम उस आवाज को सुन नहीं सकते जो परमात्मा हमारे अंदर दे रहे हैं। जिस परमात्मा ने सारे संसार को जीवन दिया है, वह संसार की रचना रचकर आप सच्चखंड में बैठे हैं, हम ये पैर लेकर वहाँ पहुँच नहीं सकते।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि वे अंधे नहीं जो हुक्म से अंधे हो गए हैं, असली अंधे वे हैं जिनके अंदर परमात्मा का प्रकाश है लेकिन वे उस प्रकाश को देख नहीं रहे। बहरे वे हैं जिनके अंदर परमात्मा का 'शब्द' दिन-रात धुनकारें दे रहा है लेकिन वे उसे सुन नहीं रहे।

सो किउ अंधा आखीऐ जि हुकमहु अंधा होइ।।
अंधे सेई नानका खसमहु घुथे जाहि।।

नानक से अखड़ीआँ बिअंनि जिनी डिसंदो मा पिरी।।

पूर्ण महात्मा परमात्मा की तरफ से हम अंधों को आँखें देने के लिए आते हैं। लूले-लंगड़ों को पैर देने के लिए आते हैं और हम बहरों के अंदर के कान खोलने के लिए आते हैं। गुरु अर्जनदेव जी कहते हैं:

पिंगल परबत पारि परे खल चतुर बकीता।।
अंधुले तृभवण सूझिआ गुर भेटि पुनीता।।
मैलु खोई कोटि अध हरे निरमल भए चीता।।
ऐसी भगति गोविंद की कीटि हसती जीता।।

महात्मा सतसंग की महिमा करते हैं, महात्मा हमें प्यार से समझाते हैं कि हमारे ऊपर **संगत का असर** पड़ता है। जिस तरह लोहा पारस की संगत करके सोना बन जाता है, एक बार सोना बनने पर फिर वह लोहा नहीं बनता। भृंगी कीड़े को लाकर बंद कर देती है फिर उसे अपनी आवाज सुनाती है जो कीड़ा उसकी आवाज को सुन लेता है फिर वह कीड़ा नहीं रहता, भृंगी बनकर उसके साथ ही उड़ जाता है। स्वाति बूंद खारे समुंद्र में गिरकर खारी हो जाती है लेकिन वही स्वाति बूंद सीपी के मुँह में पड़कर मोती बन जाती है। लोहा काठ की संगत करके पानी में तर जाता है।

इसी तरह महात्मा की संगत में जाकर हम परमात्मा से मिल लेते हैं, आत्मा शान्ति प्राप्त कर लेती है। महात्मा सतसंग उस वातावरण को कहते हैं जिसमें परमात्मा से मिलने की चर्चा की जाती है, प्रचार किया जाता है।

महात्मा हमारे भूले हुए मन को ठोकर लगाकर परमात्मा की तरफ पलटते हैं। सत वह परमात्मा है जिसका कभी नाश नहीं होता। असली संगत उस शब्द और परमात्मा के साथ जुड़ना ही है।

भक्त नामदेव जी कहते हैं कि आप बाहर सन्तों की देह को देखकर भूले नहीं कि यह हमारी तरह ही इंसान है लेकिन वे कोई और पोजीशन भी रखते हैं। वे अंदर से परमात्मा के साथ जुड़े होते हैं, परमात्मा रूप हो चुके होते हैं। उनके दर्शन करके हम सत की संगत ही कर रहे होते हैं।

गुरु अर्जनदेव जी महाराज से कुछ प्रेमियों ने सवाल किया कि सच्ची संगत किसकी होती है, किसकी संगत में बैठना चाहिए, किनकी संगत से दूर रहना चाहिए और कौन सी संगत लेखे में हैं? गुरु अर्जनदेव जी महाराज प्यार से कहते हैंः

सची बैसक तिन्ना संगि जिन संगि जपीऐ नाउ।।
तिन्न संगि संगु न कीचई नानक जिना आपणा सुआउ।।

कबीर साहब कहते हैंः

राम बुलावा भेजया दिया कबीरा रोए।
जो सुख साधू संग है सो बैकुंठ न होए।
कबीरा संगत साध की काटे कोट अपराध।
संगत बुरी असाध की आठो प्रहर अपाध।।

भागवत में कृष्ण भगवान उधो से कहते हैं, ''देख भई प्यारेया, कोई मुझे जप-तप, पूजा-पाठ या उपदेश करने से प्राप्त नहीं कर सकता। मुझे सच्चे साधू की संगत में जाकर प्राप्त किया जा सकता है।'' आप फिर कहते हैं कि मैं न आकाश में समा सकता हूँ, न पाताल में समा सकता हूँ, मैं भक्तों के दिल में, भक्तों की आत्मा में बड़ी आसानी से समा सकता हूँ।

दवाई हमें अस्पतालों में मिलती है। तालीम स्कूल-कॉलेजों में मिलती है। ठंडक पानी के पास बैठने से मिलती है। तपिश चूल्हों से मिलती है।

अगर हम इन चीजों को अपने तजुर्बे में सच समझते हैं तो जहाँ मालिक के प्यारे रहते हैं, परमात्मा भी उनके पास रहते हैं। गुरु साहब कहते हैं :

राम संत महि भेदु किछु नाही।।

कबीर साहब कहते हैं:

संता कउ मति कोई निंदहु संत रामु है एकु।।

महात्मा की बानी पूरे गुरु की महिमा करती है, अधूरे गुरु की शरण में जाकर परेशानी के सिवाय कुछ पल्ले नहीं पड़ता। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''पढ़ा हुआ ही पढ़ा सकता है, पहलवान ही पहलवानी सिखा सकता है। जिसने जिंदगी में मन के साथ संघर्ष किया है, अभ्यास किया है वही हमें अभ्यास सिखा सकता है, मन के साथ संघर्ष करवा सकता है। जो अंदर परमात्मा से मिल गया है, वही हमें परमात्मा से मिलवा सकता है।''

मैं ठोक-बजाकर अपना व्यक्तिगत तजुर्बा बताया करता हूँ कि किसी महात्मा से 'नाम' लेने से पहले और उनकी शरण में जाने से पहले आप उनकी जीवनी पढ़ें कि उन्होंने दस-पंद्रह या बीस साल अभ्यास किया है क्योंकि यह जिंदगी का सवाल है, हमने मौत का मसला हल करना है। मैं बताया करता हूँ कि रंगरलियां मनाते हुए पर्दा नहीं खुलता, यह कमाई की चीज है। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

गल्ली किनै न पाइआ।।

प्यारेयो, बातों से किले नहीं जीते जा सकते। परमात्मा ने हमारी आत्मा के दरमियान काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की विरोधी ताकतें खड़ी की हुई हैं, इन्हें हम बातों से नहीं जीत सकते। लाहौर में गूंगा पहलवान मशहूर हुआ है। महाराज कृपाल गूँगे पहलवान की मिसाल दिया करते थे कि वह दुनिया में इसलिए मशहूर हुआ क्योंकि वह सारी-सारी रात कसरत किया करता था। महाराज कृपाल ने अभ्यास के लिए रावी दरिया को चुना, वे रावी दरिया के ठंडे गहरे पानी में खड़े होकर अभ्यास

किया करते थे। महात्माओं की बानी में लिखा है कि नाम लेने से पहले हमें अच्छी तरह खोज कर लेनी चाहिए। जब नाम ले लिया है तो हमें ईमानदारी, श्रद्धा और प्यार से कमाई करनी चाहिए अगर हमारे दिल में कोई दुविधा है या हम महात्मा के लिए कोई भ्रम रखते हैं तो हम कभी भी अंदर दाखिल नहीं हो सकते।

मैं ऊपर बताकर आया था कि महात्मा हमें लड़वाने के लिए या हमारी पहली समाज तोड़कर नई समाज बनाने के लिए नहीं आते। महात्मा परमात्मा की तरफ से आत्मा के लिए संदेश लेकर आते हैं। परमात्मा जिन आत्माओं का दरगाह में फैसला कर लेते हैं कि मैंने अब इन्हें अपने पास बुलाना है, महात्मा उन आत्माओं को संदेश देते हैं बेशक संदेश देते हुए कितनी भी कठिनाईयां क्यों न पैदा हों।

महात्मा किसी सभा–सोसाइटी पर बोझ बनकर नहीं आते बल्कि वह खुद अपनी रोजी–रोटी कमाकर अपना गुजारा करते हैं। ऐसे मालिक के प्यारों के जाने के बाद हम उनकी लेखनियों को अपने ही तरीके से लिख लेते हैं, टीके कर लेते हैं और उनके नाम पर समाज बना लेते हैं। एक दूसरे से लड़ना–भिड़ना सीख लेते हैं, दरारें डालकर बैठ जाते हैं। जिन महात्माओं का उपदेश सारे संसार की आत्माओं के लिए था, उन्हें किसी कौम या समाज के साथ बाँध देना; इससे ज्यादा हम मालिक के प्यारों के साथ क्या बेइंसाफी करेंगे।

पूरे महात्मा गाय की तरह होते हैं जिस तरह गाय यह नहीं कहती कि मैं इस समाज या इस मुल्क के बंदों को ही दूध पिलाऊंगी। गाय हर एक को दूध देती है चाहे वह हिन्दु है, चाहे मुसलमान, सिक्ख या इसाई है, चाहे पूर्व या पश्चिम का जन्मलेवा है। आपके आगे स्वामी जी महाराज का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है, गौर से सुनेंः

यहाँ तुम समझ सोच कर चलना।। यहाँ तुम समझ सोच कर चलना।।
यह तो राह बड़ी अति टेढ़ी। मन के साथ न पड़ना।।

महात्मा यह संदेश लेकर आते हैं कि हमारी आत्मा सतपुरुष की अंश है और मन काल का एजेंट है। काल न रूह को मार सकता है और न ही नई रुह पैदा कर सकता है, आग इसे जला नहीं सकती और हवा इसे उड़ा नहीं सकती। आत्मा न किसी को मारती है और न मरती है। काल ने आत्मा को यहाँ रखने के लिए तन का पिंजरा घड़ दिया और साथ ही मन लगा दिया। मन की यह ड्यूटी लगा दी कि कोई भी महात्मा का उपदेश न सुने अगर सुन भी ले तो वह 'शब्द–नाम' की कमाई न करे। मन काल का वजीर है, इसने अपनी फौजें–काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार खड़ी कर ली, ये पाँचों महाबलि हैं। आलस और सुस्ती भी इसकी फौजें हैं।

परम सन्त आकर कहते हैं कि हे आत्मा, यह तेरा देश नहीं, तेरा घर नहीं। तेरा घर सतनाम है, तू काल के पराए देश में आई हुई है, तू यहाँ सोच–समझकर पैर रख। मन ही तेरा दुश्मन है, दुश्मन का कहना नहीं मानना। पहले तो मन स्थूल दुनिया में स्थूल भोगों में फँसाकर रखता है, अंदर जाने ही नहीं देता अगर बगैर गुरु के अंदर जाते हैं, काल ने अंदर बड़े टेड़े–मेड़े रास्ते बनाए हुए हैं, उसने वैसी ही अपनी जोत और आवाज भी रखी हुई हैं। पूरे गुरु जो रोज वहाँ से जाते हैं, उन्होंने इन ताकतों पर फतेह प्राप्त की होती है अगर वही हमें ले जाएं तो ले जाएं, नहीं तो हम अंदर कैसे जा सकते हैं।

भौजल धार बहे अति गहरी। बिन गुरु कैसे पार उतरना।।

यह संसार समुंद्र है, हमें न इसकी गहराई का पता है और न लम्बाई और चौड़ाई का ही पता है। इसमें कभी काम, कभी क्रोध, कभी लोभ, कभी मोह और कभी अहंकार की लहरें उठती हैं। कभी चुगली–निंदा की लहरें उठती हैं। हमें पता नहीं कि हम अनंत काल से इन लहरों में गोते खाते फिर रहे हैं। हम तैरना नहीं जानते, हमें समुंद्र की गहराई का ज्ञान नहीं अगर कोई तारने वाला मिले और हमें अपनी किश्ती का सहारा दे तो वही हमें पार लेकर जा सकता है। गुरु परमात्मा की तरफ से नाम का जहाज लेकर संसार में आते हैं, वे जिनको नाम के बेड़े में बिठा लेते हैं उन्हें लहरों से बचाकर पार ले जाते हैं क्योंकि गुरु इन लहरों से वाकिफ होते हैं।

गुरु से प्रीत करो तुम ऐसी। जस कामी कामिन संग धरना।।

अब आप प्यार से कहते हैं कि नाम मिल गया है, अब गुरु के साथ ऐसी प्रीत करो जिस तरह कामी आदमी अपनी पत्नी को नहीं भूलता या पत्नी काम के वश होकर अपने प्यारे पति को नहीं विसारती क्योंकि जिसके साथ आपका प्यार होगा आखिर में उसी के ख्याल आएंगे। सोएंगे तो उसी प्यारे की शक्ल सपने में दिखाई देगी।

दुनिया की प्रीत गरज की है, सन्तों की प्रीत प्यार की है और हमें सुधारने की है। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''हम गुरु को एक बार याद करते हैं तो गुरु करोड़ों बार याद करते हैं। हर सतसंगी उनके दिल के रजिस्ट्रर पर लिखे होते हैं।'' महाराज सावन का वाक है कि बेशक हजारों ही सतसंगी रोज चोला छोड़े, गुरु आकर उन्हें साथ ले जाते हैं।

संग करो चेटक चित राखो। मन से गुरु के चरन पकड़ना।।

आप प्यार से कहते हैं कि **आप सदा ही गुरु को प्रेम-प्यार से याद करें। दुनिया के काम करते हुए गुरु को याद करें क्योंकि अंत समय में हमारी मदद न तो माता ने करनी है, न पिता ने करनी है, न समाज ने करनी है, न किसी हुकूमत या धन दौलत ने ही हमारी मदद करनी है। आप सोचकर देख लें अगर बिना मजदूरी, बिना मुआवजे कोई हमारी सेवा करते हैं तो वे हमारे प्यारे सतगुरु हैं।**

छल वल कपट छोड़ कर बरतो। गुरु के बचन समझना।।

अब आप प्यार से कहते हैं कि आप गुरु के साथ कोई छल-फरेब न करें, कपट न रखें। उनके साथ प्यार से पेश आएं और सच्चे दिल से उनकी शरण में जाएं। गुरु नानकदेव जी भी कहते हैंः

छोडहु वेसु भेख चतुराई दुबिधा इहु फलु नाही जीउ।।

अगर आप गुरु के पास जाकर भी झूठ बोलते हैं, गुरु को भी फरेब में लेते हैं तो आपको नाम का मीठा फल खाने के लिए नहीं मिलेगा।

डरते रहो काल के भय से। खबर नहीं कब मरना।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि आप काल को कम ना समझें। पता नहीं इसने कब मौत की घंटी बजा देनी है। कहाँ एक्सीडेंट हो जाना है, कहाँ हार्टफेल हो जाना है। प्यारेयो, जो गनीमत का वक्त मिला है आप

इसमें भजन कर लें, जीते जी परमात्मा से मिल लें और अपने अंदर अपने प्यारे गुरु को प्रकट कर लें।

स्वाँसो स्वाँस होश कर बौरे। पल पल नाम सुमिरना।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि आपका कोई भी साँस सिमरन के बगैर न जाए। जिस तरह हम आँखों की पलकें ऊपर-नीचे करते हैं इसके साथ सिमरन भी चले। आप सर्कस में देखते हैं कि वे लोग किस तरह छोटी सी तार के ऊपर चलते हैं, किस तरह बाँस के ऊपर चढ़ते हैं, उनका ध्यान अपने बाँस पर होता है। वे अनेकों प्रकार के करतब दिखाते हैं। बड़े-बड़े राजा-महाराजा बैठकर उनके करतब देखते हैं। उनका ध्यान लोगों की तरफ नहीं होता कि हमें कोई देखता है या नहीं। अगर वे अपना ध्यान किसी और तरफ लेकर जाएंगे तो उसका नतीजा यह होगा कि वे गिर जाएंगे और मौत आ जाएंगी।

हमें भी उस सर्कस वाले कलाकर की तरह चाहे हम सतसंग में बैठे हैं या अभ्यास में बैठे हैं, हमें कभी भी इधर-उधर नहीं देखना चाहिए। हमारा ध्यान गुरु के स्वरूप की तरफ होना चाहिए। जब हम स्वरूप की तरफ तवज्जो देंगे तो हमारी जुबान अपने आप ही सिमरन करने लग जाएगी।

यहाँ की गफलत बहुत सतावे। फिर आगे कुछ नहिं बन पड़ना।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि अगर हमने इंसान के जामें में आकर गफलत की कि पहले यह कारोबार कर लें फिर नाम जप लेंगे। इस बार सतसंग में नहीं जाते, महात्मा सतसंग में रोज वही बातें दोहराते हैं, यहाँ बैठकर किताब पढ़ लेते हैं। यह गफलत आपको बहुत दुख देगी फिर उस वक्त पछताएंगे लेकिन पछताने से आपके हाथ पल्ले कुछ भी नहीं पड़ेगा।

जो कुछ बने सो अभी बनाओ। फिर का कुछ न भरोसा धरना।।

अगर महात्मा बनना है तो जीते जी बनना है, नेक इंसान बनना है तो जीते जी बनना है। जो लोग यह सोचते हैं कि आज हम शराब–कबाब पी लें, जिसे मर्जी कत्ल करें, जिसे मर्जी लूट लें, धन–दौलत इकट्ठी कर लें। आपने जो कुछ बनाना है अभी बनाएं, आगे का क्या भरोसा है क्योंकि आज हम जो कड़वा या मीठा फल बीज रहे हैं, यह फल हमने खुद ही खाना है।

महात्मा कहते हैं कि आप किसी का दिल न दुखाएं, किसी का बुरा न सोचें। हम भेड़, बकरी, गाय, बछड़े को पालते हैं फिर उनके पेट में छुरी चुभाते हुए आगे–पीछे नहीं देखते। गलती से कसाई की अंगुली में छुरी लग जाए तो वह कितना दुख बताता है, जान हर एक में है। उन जीवों को भी दर्द होता है, क्या कभी उनकी पुकार सुनी है?

जग सुख की कुछ चाह न राखो। दुख में इसके दुखी न रहना।।
दुख की घड़ी गनीमत जानो। नाम गुरु का छिन छिन भजना।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि आप इस तरह भजन न करें कि अगर भजन नहीं किया तो कारोबार में घाटा पड़ जाएगा, बच्चा बीमार हो जाएगा, कोई बीमारी आ जाएगी या हमारा मुकद्दमा फतेह नहीं होगा। आप गुरु को प्रकट करने के लिए भजन करें। सुख–दुख, गरीबी–अमीरी, बीमारी–तंदरुस्ती ये हम धुर से लिखवाकर लाए हैं; जो प्रालब्ध बन गई है, वह हमें हर हालत में भोगनी पड़ती है। दुख की घड़ी को गनीमत जानें क्योंकि दुख के समय मन का झुकाव दुनिया की तरफ से हटा होता है, यह सिमरन करने का मौका होता है। उस समय आप गुरु का दिया हुआ सिमरन करें क्योंकि सुख के समय मन गाफिल होता है, हमें परमात्मा की भक्ति की तरफ आने ही नहीं देता।

सुख में गाफिल रहत सदा नर। मन तरंग में दम दम बहना।।
ता ते चेत करो सतसंगत। दुख सुख नदियाँ पार उतरना।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि आप मन को हाजिर रखकर सतसंग सुनें क्योंकि हम मन को समझाने के लिए ही यहाँ बैठे हुए हैं। ये सुख–दुख की दो नदियां हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैः

संपै देखि न हरखीऐ बिपति देखि न रोइ।।
जिउ संपै तिउ बिपति है बिथ ने रचिआ सो होइ।।

अपना रूप लखो घट भीतर। फिर आगे को सूरत भरना।।
राधास्वामी कहें बुझाई। शब्द गुरु से जाकर मिलना।।

आप प्यार से कहते हैं कि जब आप सन्तों का सतसंग करेंगे, गुरु का दिया हुआ सिमरन करेंगे, सिमरन के जरिए नौं द्वारे खाली करके आँखों के पीछे आ जाएंगे तो आपको पता चलेगा कि हमारी आत्मा परमात्मा की अंश है। यह मन का साथ लेकर अपने घर को भूल गई थी फिर यह अपने घर जाने के तैयारी करेगी।

आप प्यार से कहते हैं कि वह परमात्मा समुंद्र है, गुरु उसकी लहर है और आत्मा उसकी बूंद है। जिस तरह बूंद लहर के सुपर्द हो जाती है तो लहर उसे समुंद्र की तह में लेकर बैठ जाती है इसी तरह हमारी आत्मा उस लहर गुरु के साथ जाकर मिल जाती है, गुरु के शब्दों पर ऐतबार करती है। गुरु जिस समुंद्र में से आए होते हैं, इसे लेकर उसी परमात्मा रूपी समुंद्र में जाकर समा जाते हैं।

स्वामी जी महाराज ने इस छोटे से शब्द में बहुत प्यार से बताया है कि आपने यहाँ सोच समझकर चलना है। मन का साथ नहीं करना, गुरु की आज्ञा के मुताबिक चलना है, गुरु का दिया हुआ सिमरन करना है।

हमने दुख–सुख की नदियों को कर्मों के मुताबिक पार करना है, हम इन्हें गुरु के आसरे 'शब्द' के आसरे ही पार कर सकते हैं। हमें भी चाहिए कि सन्त–महात्मा आत्मा के लिए जो संदेश लेकर आते हैं, हमें उस संदेश को सुनना चाहिए और अपने जीवन को पवित्र बनाना चाहिए। ✻✻✻

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से बचपन की एक यादगार दास्तान

मौत का रहस्य

मुझे बचपन से ही हर समय महसूस होता था कि मेरा कुछ खो गया है। जब मेरा ध्यान इस तरफ गया उस समय मैं सात साल का था। हमारे घर के नजदीक पेड़ के नीचे एक बुजुर्ग बैठा करता था। जब मैं अपनी माता के साथ बाहर जाता तो उस बुजुर्ग को पेड़ के नीचे बैठे हुए देखता था, वह बहुत बूढ़ा था और आगे की तरफ झुककर बैठता था।

मैंने अपनी माता से पूछा कि यह बुजुर्ग इस तरह झुककर क्यों बैठता है? मेरी माता ने जवाब दिया, ''हर किसी की जिंदगी में ऐसा समय आता है कि जब इन्सान बूढ़ा हो जाता है तो इस तरह झुककर बैठता है।'' मेरी माता की इस बात ने मुझे बहुत प्रभावित किया। मैंने सोचा कि इन्सान हमेशा एक जैसा क्यों नहीं रहता? फिर मुझे अपने शरीर पर भी तरस आने लगा कि अगर हम अपने शरीर को लम्बे समय तक वैसा नहीं रख सकते तो इस शरीर से मोह करने का क्या फायदा?

मैंने एक साल तक उस बजुर्ग को उसी तरह बैठे हुए देखा। एक दिन मैं अपनी माता के साथ बाहर गया तो वह मुझे उस पेड़ के नीचे बैठा हुआ दिखाई नहीं दिया। मैंने अपनी माता से पूछा कि वह बुजुर्ग कहाँ चला गया है? मेरी माता ने मुझे बताया, ''वह बुजुर्ग मर गया है।'' मैंने अपनी माता से पूछा कि वह मरकर कहाँ गया है, क्या वह इस संसार में वापिस आ सकेगा? मेरी माता ने जवाब दिया, ''मुझे नहीं पता कि मरने के बाद इन्सान कहाँ जाता है, मरने के बाद कोई भी इस संसार में वापिस नहीं आता।''

भोलेपन में मैंने अपने आप से पूछा कि जब इन्सान यह नहीं जानता कि वह मौत के बाद कहाँ जाता है फिर इस संसार में वापिस आएगा या नहीं तो इन्सान इस संसार से लगाव क्यों रखता है?

मैं अभी छोटा ही था कि कुछ समय बाद मेरे एक दोस्त ने शरीर छोड़ दिया, वहाँ बहुत लोग रो रहे थे और शोक मना रहे थे। मैं यह जानना चाहता था कि उसे क्या हुआ? मुझे लगा कि रोना–धोना सुनकर यह जरूर उठ जाएगा लेकिन वह नहीं उठा। जब लोग उसके मृत शरीर को उठाकर श्मशान ले जा रहे थे तो मैंने अपनी माता से पूछा, ''यह कहाँ चला गया है?'' मेरी माता ने जवाब दिया, ''उसने शरीर छोड़ दिया है, अब उसके शरीर को जला दिया जाएगा ताकि वह वापिस न आ सके।''

मैं समझ गया कि मेरे माता–पिता भी नहीं जानते कि इन्सान मौत के बाद कहाँ जाता है। जिन्हें यह नहीं मालूम कि मौत के बाद इन्सान कहाँ जाता है, ये इस **मौत के रहस्य** को सुलझाने में मेरी मदद कैसे करेंगे? मुझे बताया गया कि जो इस संसार में जन्म लेता है, एक दिन उसका अंत अवश्य आता है और उसे संसार छोड़कर जाना पड़ता है। मेरी आत्मा परमात्मा से अलग थी। मुझे अपने अंत समय की चिन्ता थी इसलिए मैं दिन–रात रोया करता था कि मुझे इस समस्या के दर्द से छुटकारा मिल जाए।

मौत का रहस्य मुझे दिन–रात सताता था। मैं सोचा करता था कि मौत क्यों आती है? जब कोई मर जाता है तो क्या होता है, मौत के समय कौन मदद करने आता है? मैं इस मौत के रहस्य से दु:खी था। मैं हमेशा अकेला ही सोता और इस समस्या के बारे में गहराई से सोचता। इस समस्या की सोच में मेरी नींद उड़ गई।

मैं उस समय बच्चा था, मेरी माता मुझे मुलायम बिस्तर पर सुलाकर जब अपने कमरे में चली जाती तो मैं फर्श पर बोरी बिछाकर सो जाता। मेरी माता जब दो–तीन बजे मुझे देखने आती तो मैं उसके पैरों की आवाज सुनकर बिस्तर पर चला जाता था। वह कई बार मुझे रंगे हाथों जमीन पर सोते हुए पकड़ लेती और नाराज होकर कहती, ''तुम पलंग पर क्यों नहीं सोते, हमने तुम्हारे लिए इतनी आरामदायक चीजें बनाई हैं तुम इन चीजों

का इस्तेमाल नहीं करते, हम ये धन–सम्पत्ति किसके लिए इकट्ठी कर रहे हैं? अभी तुम्हारी भक्ति करने की उम्र नहीं है, तुम बहुत छोटे हो।''

मैं सोच रहा था कि छोटी लकड़ियों को पहले आग लगती है। मैंने अपनी माता से कहा, ''हो सकता है कि मैं तुमसे पहले ही मर जाऊँ।'' मैं इस बात से भी भयभीत था कि कहीं मैं **मौत का रहस्य** सुलझाने से पहले ही न मर जाऊँ।

मेरे माता–पिता परेशान थे कि मुझे क्या हो रहा है। उन्होंने सोचा कि मेरे साथ कोई गड़बड़ है। हो सकता है कि किसी भूत ने मुझे वश में कर रखा हो, उन्होंने ताबीज और कई ऐसी चीजों का इस्तेमाल किया। मैं सोचता था कि वह क्या चीज है जो मुझसे बिछुड़ गई है। मेरे दिल में उस परमात्मा से मिलने की तमन्ना थी। मैं नहीं जानता था कि वह कौन है और कहाँ रहता है?

मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। वह अनदेखी ताकत मेरे सामने नहीं आ रही थी, मुझे बैचेन कर रही थी। मैं अपनी हालत अपनी माता को भी नहीं बता पा रहा था। मैं उनसे सिर्फ यही कहता,''मैं आपको नहीं बता सकता कि मेरा क्या खोया हुआ है। मुझे जिसकी याद सता रही है, मैंने उसे नहीं देखा।'' मुझे अपने माता–पिता पर भरोसा था कि यही मेरे रक्षक हैं। ये जिंदगी के हर मोड़ पर मेरी रक्षा करेंगे। तब मैं यह नहीं जानता था कि एक दिन ये सब संसार छोड़ जाएंगे सिर्फ परमात्मा ही रक्षक हैं।

एक बार मैंने किसी के माता–पिता को शरीर छोड़ते हुए देखा। मेरे मन में यह विचार आया कि जब इस लड़के के माता–पिता शरीर छोड़ रहे हैं तो इसका मतलब यह है कि मेरे माता–पिता भी शरीर छोड़ेंगे। मैं कैसे सोच लूं कि यही मेरे रक्षक हैं हालांकि मेरे असली माता–पिता तो पहले ही शरीर छोड़ चुके थे। जो माता–पिता मेरा पालन–पोषण कर रहे हैं ये भी शरीर छोड़ देंगे; मैं इन्हें भी अपना असली रक्षक नहीं मान सकता।

एक बार मैं बच्चों के साथ खेल रहा था तो मेरे अंदर एक ऐसा विचार आया जिसने मेरी जिंदगी को पलट दिया। यह मुझे एक स्वपन की तरह याद है, मैंने खेलते-खेलते मिट्टी की दस-बारह ढेरियाँ बनाई। ये ढेरियाँ मैंने अपने भाई-बहन और रिश्तेदारों के नाम की बनाई। मैंने एक-एक ढेरी से सवाल किया क्या तुम मौत के समय मेरी रक्षा करोगे? मुझे अंदर से जवाब मिला कि हम खुद अपने जन्म-मरण में उलझे हुए हैं तो तुम्हारी रक्षा कैसे कर सकते हैं?

मैंने निराश होकर एक-एक करके सब ढेरियाँ तोड़ दी। सिर्फ एक ढेरी बची जो उस छुपी ताकत की थी जिसकी तलाश मेरी आत्मा को थी। मैंने उस ताकत को तो नहीं देखा था लेकिन मुझे मालूम था कि जरुर कोई ऐसी ताकत इस संसार में है जो मेरी रक्षा करेगी। जब मैंने उस ढेरी से सवाल पूछा तो मेरे अंदर से जवाब आया, ''हाँ, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा।'' मैंने सोचा कि यह वही परमात्मा है। मैंने उस ढेरी के सामने अपना सिर झुका दिया कि यही मेरा रक्षक है।

आमतौर पर माता-पिता यह ध्यान नहीं देते कि उनके बच्चे क्या खेल रहे हैं अगर वे ध्यान दें कि बच्चा कुछ ऐसा खेल खेल रहा है जिसके बारे में माता-पिता को पता न चले तो वे जिज्ञासु हो जाते हैं और जानना चाहते हैं कि बच्चा क्या खेल रहा है? मेरे पिता जी मुझे यह सब करते हुए देख रहे थे। उन्होंने मुझसे पूछा, ''तुम क्या खेल रहे थे, तुमने इतनी सारी ढेरियाँ बनाई, एक ढेरी को छोड़कर बाकी की ढेरियाँ क्यों तोड़ दी और इस ढेरी के सामने अपना सिर क्यों झुका रहे हो?''

मैंने अपने पिता जी को बताया कि जब मैंने फलां लड़के के माता-पिता को संसार छोड़ते देखा तो मैं समझ गया कि आप भी संसार छोड़ जाएंगे, आप मेरे रक्षक नहीं बन सकते। मैंने अपने भाई-बहनों, रिश्तेदारों और कौम के सभी लोगों के बारे में सोचा कि वे भी एक दिन शरीर छोड़ जाएंगे।

मैंने ये मिट्टी की जो ढेरियाँ बनाई थी, ये ढेरियां मेरे भाई-बहनों और सांसारिक रिश्तेदारों की थी। मैं इनसे सवाल कर रहा था कि क्या कोई मेरी रक्षा कर सकता है लेकिन मुझे किसी से भी साकारात्मक जवाब नहीं मिला इसलिए मैंने इन्हें तोड़ दिया लेकिन यह जो एक ढेरी बची है, यह परमात्मा का प्रतीक है। मुझे अंदर से जवाब मिला कि यह मेरा रक्षक है और मुझे मौत से बचाएगा।

मेरी ये सब बातें सुनकर मेरे पिता बहुत हैरान हुए, उन्हें अंदाजा ही नहीं था कि मेरी सोच इतनी गहरी और ऊँची हो सकती है। उन्होंने नाराज होकर मुझसे कहा, ''हम तुम्हारी इतनी अच्छी देखभाल करते हैं, तुम्हें अच्छे से अच्छा खाना खिलाते हैं, हर तरह की अच्छी चीजें देते हैं फिर भी तुम कह रहे हो कि हम तुम्हारी रक्षा नहीं करेंगे।'' ये सब वह अपने संकुचित दिमाग के मुताबिक सोच रहे थे। वे यह नहीं जानते थे कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूँ।

मेरे पिता ने मुझसे कहा, ''प्यारे बेटे, अभी तुम बहुत छोटे हो। ये सब मत सोचो। मैंने तुम्हारे लिए सुंदर घर बनाया है, बहुत सम्पत्ति इकट्ठी की है। मैं तुम्हारी हर जरूरत का सामान तुम्हें दूँगा, तुम्हारी शादी करवाऊँगा और तुम्हें एक सुंदर-सी बीवी भी मिलेगी।'' यह सब सुनकर मैंने जमीन पर थूक दिया और उनसे कहा, ''पिता जी, मैं आपसे अंदर के संसार के बारे में पूछ रहा हूँ। क्या आप मेरे साथ अंदर जा पाएंगे, क्या आप वहाँ मेरी मदद कर सकेंगे जहाँ संसार का कोई भी इन्सान मदद नहीं कर सकता? यह सांसारिक धन-दौलत, जमीन-जायदाद मेरे लिए थूक से ज्यादा कुछ भी नहीं है, मेरे लिए इनकी कोई कीमत नहीं है।''

फिर मैंने अपने पिता जी से पूछा कि क्या वह पत्नी हमेशा जिन्दा रहेगी, क्या वह मुझे मौत से बचा सकेगी? उन्होंने कहा, ''वह भी संसार छोड़ेगी, वह तुम्हें मौत से कैसे बचा सकती है?'' मैंने उनसे कहा, ''मैं

शादी नहीं करना चाहता। मैं अब जान गया हूँ कि सिर्फ परमात्मा ही मुझे मौत से बचा सकते हैं।'' मेरे पिता जी को ये सब बहुत बुरा लगा लेकिन जो कुछ मैंने कहा वह सच था। जब आपके अंदर ऐसे विचार आने लगते हैं तो आप सब दुनियावी सहारे छोड़ देते हैं और परमात्मा को पुकारते हैं। उस परमात्मा से भी रहा नहीं जाता, परमात्मा आकर आपकी मदद करते हैं।

कबीर साहब फरमाते हैं कि दुनिया में जब मैंने अपने आस–पास देखा तो कोई रिश्तेदार, जमीन–जायदाद मौत के समय मदद नहीं कर सकते। उस समय केवल परमात्मा ही मदद कर सकते हैं। वही परमात्मा मुझे इस तपती हुई दुनिया में सहारा दे सकते हैं। तब मैंने अपने दोनों हाथ फैलाकर उस परमात्मा को बुलाया तो उनसे भी रहा नहीं गया और वह मुझे खींचकर ऊपर ले गए। उस दिन से मेरा इन दुनियावी चीजों से मोह नहीं रहा। त्याग और परमात्मा की तड़प मेरे अंदर घर कर गई।

जब हमारे अंदर इस तरह के विचार आते हैं कि इस संसार में कोई भी हमारी मदद नहीं कर सकता, हमारा एकमात्र सहारा वह परमात्मा ही है तो हम उन पर विश्वास करना शुरू कर देते हैं। तब परमात्मा हमें अपने चुनाव में लाते हैं और किसी ऐसे के पास भेजते हैं जो हमें परमात्मा की भक्ति करना सिखा सके।

मेरी माता जी मुझे बताया करती थी कि कोई छुपी हुई ताकत है जो इन्सान के माथे पर उसका नसीब लिख देती है जो उसके नसीब में लिखा होता है, उसी के मुताबिक इन्सान रोता है या खुश होता है।

मुझे बचपन से ही भजन लिखने की प्रेरणा मिली। मैंने उस समय परमात्मा की तड़प और याद में बहुत से भजन लिखे। मैंने गुरु के मिलने से पहले यह भजन लिखा और मैं बचपन से ही यह भजन गाता आया हूँ। वे सर्वशक्तिमान हैं, हर जगह मौजूद हैं।

मैं सोचा करता था कि वे आत्माएं कितनी भाग्यशाली होंगी जिन्हें अपने जीवन काल में ही जीवित महापुरुषों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उस समय मैंने यह शब्द लिखा:

लिखन वालेया तूँ हो के, दयाल लिख दे,
मेरे हिरदे विच गुरां दा, प्यार लिख दे।

मुझे बचपन से ही आँखें बन्द करके बोरी पर बैठने की आदत थी। जब मैंने इस तरह बैठना और जमीन पर सोना शुरू किया तो मेरे पिता को मेरी बहुत चिन्ता हुई। उन्होंने पंडित को बुलाया, पंडित ने सोने की कलम से मेरी जीभ पर 'ॐ' लिख दिया। इसलिए मैंने अपने भजन में कहा है कि मेरी जीभ पर 'ॐ' नहीं बल्कि मेरे गुरु का नाम लिखा जाना चाहिए।

मुझे बचपन से ही धुन और ज्योति का अनुभव होता था इसलिए मैंने अपने भजन में कहा है;

मेरे कन्नां विच धुन दी, आवाज लिख दे,
मत्थे ते लिख दे,जोत गुरु जी दी।

पवित्र आत्माएं बचपन से ही धुन सुन सकती हैं और रोशनी देख सकती हैं। ऐसी आत्माओं को जब तक पूर्ण गुरु नहीं मिलते और ये उनके कहे अनुसार भजन-अभ्यास नहीं करती तब तक धुन और रोशनी इन्हें ऊपर नहीं खींच सकती इसलिए मैंने अपने भजन में कहा है:

मेरी अक्खां विच गुरु दा, दीदार लिख दे।

मैं उस समय सोचा करता था कि जिन लोगों के पास पूरा गुरु है, वे लोग गुरु के जाने के बाद कैसे जीते हैं इसलिए मैंने भजन के आखिर में किस्मत लिखने वाले के आगे प्रार्थना की है:

इक ना लिखीं मेरे, सतगुरु दा विछोड़ा,
भावें छुट जाए सारा, संसार लिख दे।

✻✻✻

प्यार और भरोसा

DVD-607(3)

25 सितम्बर 1988 16 पी.एस. आश्रम, राजस्थान

एक प्रेमी: प्यारे महाराज जी, मुझे 'नामदान' प्राप्त हुए आठ साल हो गए हैं लेकिन मैं तमाम कोशिशों के बावजूद भी अभ्यास में कोई तरक्की नहीं कर सकी हूँ। अभ्यास से मेरा रास्ता उजागर नहीं होता, जिस वजह से लोग आपकी और मेरी निन्दा करते हैं, मुझे बहुत दुःख होता है। मैं जानना चाहती हूँ क्या मेरा स्वभाव बहुत ज्यादा खराब है या मेरे कर्म बहुत भारी हैं और मेरी सुरक्षा के लिए अभी आपको कितना दुःख उठाना पड़ेगा?

बाबा जी: सभी सतसंगी इस सवाल को खुले दिल से सोचें। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मियां-बीबी के एक जैसे कर्म नहीं होते और उनका तजुर्बा भी एक जैसा नहीं होता। हम नहीं जानते कि हम पिछले कौन-से कर्मों का हिसाब दे रहे हैं, बुरे कर्मों का आत्मा पर बुरा प्रभाव पड़ता है।''

मैं कहा करता हूँ कि हार जाना उतना बुरा नहीं जितना हार मान लेना बुरा है। हमारा व्यक्तिगत तजुर्बा है अगर हम श्रद्धा, प्यार और भरोसे से इस रास्ते पर चलते हैं तो हमें खुद ही अपनी गलती का पता चल जाता है फिर हम शिकायत नहीं करते।

'नामदान' के समय दो-चार सौ प्रेमियों को एक साथ बिठाया जाता है लेकिन सबका तजुर्बा एक जैसा नहीं होता। कई प्रेमियों को दो बार भी बिठाया जाता है। थोड़े ही लोग ऐसे होते हैं जिन्हें कुछ भी प्राप्त नहीं होता अगर वे भी प्यार और भरोसे से अभ्यास करें तो उनकी शिकायतें खत्म हो जाती हैं। बहुत सी अच्छी प्रेमी आत्माएं जब 'नाम' लेने आती हैं तो उन्हें ज्यादा समझाने की जरूरत नहीं पड़ती, जैसे ही उन्हें तवज्जो दी जाती

है, वे अपने अच्छे तजुर्बे इकबाल करती हैं। कई बार हम गलती करते हैं लेकिन हमारा मन धोखेबाज है, यह बात को समझने ही नहीं देता।

पहले टूर पर सन्तबानी आश्रम में काफी लोगों को 'नामदान' दिया गया। वहाँ साउथ अफ्रीका की एक प्रेमी आत्मा आई, उसे 'नामदान' के समय न आवाज सुनाई दी और न रोशनी ही दिखाई दी। उसने बहुत प्यार और सब्र से कहा कि मुझे इसके कारण का पता है, समय आने पर सब कुछ ठीक हो जाएगा। उसने नियम और प्यार से भजन–अभ्यास किया। उसके परिवार पर इस बात का बहुत अच्छा असर हुआ। उसके पति ने 'नाम' लिया, वहाँ और भी बहुत सी संगत बन गई। एक साल बाद उसे अच्छा तजुर्बा हुआ और उसका सब कुछ ठीक हो गया।

इसी तरह वहाँ एक और प्रेमी था जिसे दो बार बिठाया गया लेकिन उसे भी कोई तजुर्बा नहीं हुआ। कुछ समय बाद उसने पत्र लिखा कि तजुर्बा न होने का कारण मुझे मालूम है। मुझे अफसोस है कि मैं शर्म की वजह से आपको बता नहीं सका।

प्यारेयो, मन की यह आदत है यह अपने ऊपर इल्जाम नहीं लेता, हमेशा दूसरों पर इल्जाम लगाता है। अगर हम डायरी रखें तो कुछ ही दिनों में हम अपने आपको सुधार सकते हैं।

एक बार बाबा सावन सिंह जी पहाड़ पर गए। उन्होंने जिन्हें 'नामदान' दिया उन सबको अच्छा तजुर्बा हुआ, वे बहुत खुश हुए। वे हमेशा अपने सतसंगों में जिक्र किया करते थे कि पहाड़ की रूहें बहुत अच्छी और पवित्र हैं। 'नाम' देते ही इनका ख्याल अंदर चला जाता है।

बैंगलोर के प्रेमी हिन्दी अच्छी तरह नहीं समझते। वहाँ के कार्यक्रम में बहुत से प्रेमियों ने 'नाम' लिया। किसी को भी दूसरी बैठक देने की जरूरत नहीं पड़ी, वे बहुत अच्छी आत्माएं थी।

मैं इसी साल कोलम्बिया गया। वहाँ बहुत से प्रेमियों ने सतसंग सुना और 'नामदान' लिया। वे बहुत प्यार भरी आत्माएं थीं, किसी ने भी दूसरी बैठक नहीं ली। सन्तमत सरकारी नौकरी की तरह नहीं है कि इतने सालों बाद सुरत अंदर जाएगी या तजुर्बा होगा। यह हमारी मेहनत, पवित्र ख्यालों, प्यार और भरोसे पर निर्भर करता है।

प्यारेयो, यह ठंडे दिल से समझने वाली बात है कि हमें गुरु पर भरोसा होता है और हम अभ्यास भी कर रहे होते हैं लेकिन हमारा ध्यान अपनी गलतियों की तरफ नहीं जाता। जिस तरह मरीज को डाक्टर पर भरोसा होता है, वह पैसे खर्च करके डाक्टर से दवाई लाता है। डाक्टर के कहे अनुसार परहेज नहीं करता और समय पर दवाई नहीं खाता तो उसे फायदा नहीं होता। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मरीज बिस्तर पर दवाई अलमारी में और गालियाँ डाक्टर को।'' हमारी यही हालत है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

ठीका ठौर न पावी, गुरु को दोष लगावी।

हममें कुछ कमियाँ होती हैं। सतसंगी की जिम्मेदारी है कि वह घर में ही नहीं बल्कि पड़ोस में एक मिसाल बनकर पेश आए। उसे देखकर और लोग भी 'नामदान' प्राप्त करें और अपना जीवन बनाएं।

मैं अपने पिता की एक दिलचस्प बात बताया करता हूँ, सिक्ख समाज में सुबह जपजी साहब पढ़ना जरूरी समझा जाता है। मेरे पिता को एक महात्मा मिला जो अंदर तो नहीं जाता था सिर्फ माला फेरा करता था। उसने मेरे पिता को माला देकर कहा कि जपजी साहब पढ़ते हुए माला फेरा कर, तेरे बिगड़े हुए सब कारोबार ठीक हो जाएंगे।

आप जानते हैं कि घरों में बहुत समस्याएं होती हैं अगर न भी हों तो यह मन समस्याएं पैदा कर लेता है। मेरे पिता जी सुबह पशुओं को चारा डालते, नौकरों को गालियाँ भी देते और जपजी साहब पढ़ते–पढ़ते माला

भी फेरते रहते। मैं और मेरी माता कहते, ''परमात्मा, आपके जपजी साहब का पाठ पसंद करेंगे या आपकी गालियों को पसंद करेंगे?'' ऐसे लोग माला देने वाले को भी बदनाम करते हैं।

बाबा बिशनदास जी ने मेरे पिता से कहा, ''तू ध्यान लगाकर जपजी साहब का पाठ कर ताकि लोग तेरी तारीफ करें कि जब से यह माला जपने लगा है तब से किसी के साथ झगड़ता नहीं, बहुत शान्त है।''

सतसंगी में से 'नाम' की खुशबू आनी चाहिए। सतसंगी को तजुर्बों की तरफ ध्यान नहीं देना चाहिए। चाहे मन को कितनी भी तकलीफ हो अभ्यास में अवश्य बैठें। शब्द, प्रकाश, तारे और देखने वाली शक्ति आपके अंदर है। कण-कण में व्यापक 'शब्द-रूप' गुरु भी अंदर आपकी इंतजार में है।

हम शिकायतें तभी करते हैं जब अभ्यास में नहीं बैठते। सन्त हमें हिदायतें करते हुए कहते हैं, ''विषय-विकारों से दूर रहें, ख्याल को बाहर से हटाकर अंदर एकाग्र करें। दुनिया में रहते हुए मन को काबू में करके अंदर जाना ज्यादा मुश्किल नहीं लेकिन मन ने इसे मुश्किल बना रखा है।''

एक प्रेमी: जब सतसंगी गुरु से दर्शनों की माँग करता है तो क्या वह चोर होता है?

बाबा जी: हम गुरु के दर्शन उस समय माँगते हैं जिस समय हमारा मन शान्त होता है और यह तीसरे तिल पर एकाग्र होने की कोशिश करता है। यह चोर नहीं होता, गुरु की देह के दर्शन करना चाहता है लेकिन मन बाहर ही भटकाता रहता है। सच तो यह है कि जब सतसंगी के अंदर ऐसा विचार उठता है, उस समय उसे मौके का फायदा उठाकर अभ्यास में बैठ जाना चाहिए।

जिस गुरु ने हमें 'नाम' दिया होता है वे बेइन्साफ नहीं होते। वे हमारी आवाज सुनने के लिए नजदीक से नजदीक 'शब्द-रूप' में हमारे अंदर

बैठे हैं। गुरु 'शब्द–रूप' होकर हमारे रोम–रोम में समाए होते हैं, वे सेवक को एक सेकंड के लिए भी नहीं छोड़ते।

सिक्खों के छटे गुरु हरगोबिंद जी का एक शिष्य रूपचन्द था, रूपचन्द का एक भाई था। आमतौर पर अप्रैल–मई के महीने में बहुत गर्मी होती है। उस समय जमींदार लोग फसल की कटाई करते हैं। उन दिनों फ्रिज नहीं होते थे, ठंडा पानी बहुत मुश्किल से मिलता था। दोनों भाइयों को प्यास लगी, वे पानी पीने के लिए कुएं पर गए। कुएं का पानी बहुत ठंडा था कि उन्होंने सोचा यह पानी तो गुरु के पीने के काबिल है। वे प्यास से व्याकुल हो गए लेकिन उन्होंने पानी नहीं पिया।

उस जगह से लगभग पचास–साठ मील की दूरी पर गुरु हरगोबिंद जी संगत में बैठे थे। गुरु हरगोबिंद जी तेज घोड़ा दौड़ाने में माहिर थे। सतसंग करते हुए उन्होंने कहा कि हमारे सेवक प्यास से व्याकुल हैं, हमें बहुत जल्दी उनके पास पहुँचना है। गुरु हरगोबिंद ने वहां पहुँचकर उन्हें पानी पिलाया। जिस जगह गुरु हरगोबिंद ने अपने शिष्य रूपचन्द को पानी पिलाया, अब उस जगह यादगार बनी हुई है।

सोचकर देखें, उस समय कौन सा टेलीफोन गया था? दिल को दिल से राह होती है। गुरु जानी–जान होते हैं। गुरु ने वहां पहुँचकर अपने शिष्य को दर्शन दिए और उसकी आत्मा की प्यास बुझाई।

महाराज कृपाल बताया करते थे कि राजा राम सर्राफ महाराज सावन सिंह जी का प्यारा शिष्य था। एक बार वह खरबूजा खाने लगा, खरबूजा बहुत मीठा था। उसे अंदर ही ख्याल आया कि यह खरबूजा तो महाराज जी के खाने के काबिल है, उन्हें इसका भोग लगवाया जाए।

मुल्तान से डेरा ब्यास काफी दूरी पर है। राजा राम सर्राफ उसी तरह खरबूजा कार में लेकर डेरा ब्यास पहुँचा। उस समय महाराज सावन सिंह जी सतसंग देने के लिए होशियारपुर गए हुए थे। उस समय काफी आँधी तूफान चल रहा था। जब राजा राम खरबूजा लेकर होशियारपुर पहुँचा तो

महाराज सावन सिंह जी ने उसे देखकर हँसते हुए कहा, ''राजा राम, तूने इतनी तकलीफ क्यों उठाई? खरबूजा तो तभी मिल गया था जब तूने मुझे याद किया था।'' शिष्य की तड़प को गुरु ही पूरा कर सकते हैं। जिसने प्यार किया है वही प्यार की कद्र जानता है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

विणु बोलिआ सभु किछु जाणदा
किसु आगै कीचै अरदासि।।

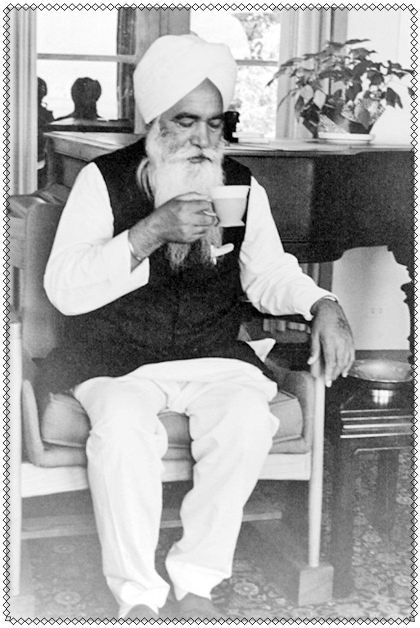

हम जीव अंधे हैं, यह नहीं जानते कि हम उनसे जो वस्तु माँग रहे हैं, उसमें हमारा फायदा है या नुकसान है। कई बार हम जो माँगते हैं, उसमें हमारा बहुत बड़ा नुकसान होता है। इस बात का फैसला गुरु ही कर सकते हैं कि हमारे लिए क्या फायदेमंद है अगर हम दर्शन माँगते हैं तो गुरु दर्शन अवश्य ही देते हैं।

आज इस जगह 16 पी.एस. में सब सुविधाएं हैं। यहाँ बाग हैं, पानी की सुविधा है और यहाँ पहुँचने के लिए पक्की सड़कें भी हैं। जब हुजूर कृपाल इस गरीब अजायब को दर्शन देने के लिए आते थे तब यहाँ ऐसी कोई सुविधा नहीं थी, सिर्फ रेत ही रेत थी। यह सिर्फ दर्शनों की माँग ही थी। आज आप यहाँ जो गुफा देखते हैं, उस समय यहां इतना सा ही मकान था जो उनके हुक्म से बनवाया गया था।

मैं कहा करता हूँ, ''रोने का मजा ही नहीं आता जब तक आँख पोंछने वाला पास न हो।'' यह एक सच है कि वे मेरी आँखों के आँसू पोंछने के लिए भी आते थे, ढांढ़स भी देते थे अगर वे ढांढ़स न देते तो

यह गरीब आत्मा अभ्यास ही नहीं कर सकती थी। शिष्य पुतली और गुरु उसे नचाने वाला नट होता है, पुतली की डोर नट के हाथ में होती है। यह हम पर निर्भर करता है कि हमारे अंदर गुरु के प्रति कितना भरोसा और कितनी श्रद्धा है। गुरु के हुक्म को मानना ही सबसे बड़ी सेवा है अगर हम गुरु के हुक्म का पालन करते हैं तो चुटकी बजाने में तो देर लगती है लेकिन वह पहले ही दर्शन दे देता है।

अगर हम अंदर जाएं, आत्मा से तीनों पर्दे उतार लें तो जान जाएंगे कि गुरु देह नहीं होते। देह तो उन्होंने इस संसार मंडल में आकर धारण की हुई है जो उन्होंने यहीं छोड़ जानी है। गुरु का असली रूप 'शब्द–नाम' होता है जो कण–कण में व्यापक है। गुरु ने बाहर से नहीं आना, उन्होंने अंदर से ही दर्शन देने हैं।

आमतौर पर शिष्य और गुरु में ऐसे तजुर्बे होते रहते हैं। गुरु किसी और में बैठकर भी प्रेमी का काम कर जाते हैं। प्रेमी शिष्य समझ जाता है कि यह हमदर्दी मेरे गुरु ने ही की है।

बाबा जयमल सिंह जी ने सावन सिंह जी से कहा था, ''हमें गुरु के खेल को समझना चाहिए। कई बार ऐसा होता है कि रात के समय हम रास्ता भूल जाते हैं, गुरु किसी और का रूप धारण करके हमें सही रास्ते पर डाल देते हैं। अगर सेवक का ध्यान गुरु की तरफ हो तो गुरु अपने असली स्वरूप में भी आ सकते हैं।'' अगर सन्त इस तरह के चमत्कार दिखाएं तो हम उनका जीना ही मुश्किल कर देते हैं। गुरु सेवक के सब काम करते हैं लेकिन जाहिर नहीं होने देते।

एक बार की बात है कि हम हनुमानगढ़ के नजदीक से निकल रहे थे। उस दिन भी आज की तरह बहुत तेज बारिश हुई थी, दिन छिपने वाला था। हमारी जीप एक खड्डे में गिर गई जिसमें से निकलना बहुत मुश्किल था। तब मुझे 'नाम' मिला ही था, मेरे साथ दो–तीन प्रेमी भी थे। उस

जीप का ड्राईवर पदमपुर का रहने वाला था, मैंने ड्राईवर से कहा कि मैं जीप के अगले एक हिस्से को ऊपर उठाता हूँ, तू रेस दे, तेरी जीप खड्डे से निकल जाएगी।

मैंने बहुत प्यार से अपने गुरु के आगे प्रार्थना की कि जिस तरह कृष्ण ने द्रौपदी की लाज रखी थी। दुर्योधन सभा में द्रौपदी को बेइज्जत कर रहा था, द्रौपदी कृष्ण की शिष्या थी। जब द्रौपदी ने कृष्ण की आराधना की तो वहाँ साड़ियों के अम्बार लग गए। इसमें मेरी कोई करामात नहीं थी, यह सब गुरु कृपाल की करामात थी कि हमारी जीप उस खड्डे से निकल गई और उन्होंने हम सबका बचाव किया।

प्यारेयो, गुरु पर्दे के पीछे सेवक के सब कार्य करते हैं। जो सेवक अपना बाहुबल छोड़कर गुरु के सहारे हो जाता है, गुरु उसके सारे कार्य अवश्य करते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर बेटा बीमार हो जाए तो हम प्रार्थना करते हैं कि गुरु इसे ठीक करें। हम कर्मों के बोझ को नहीं समझते, बेटा ठीक नहीं होता तो हमारा गुरु से भरोसा खत्म हो जाता है। मुकदमा लगने पर मुकदमा फतेह नहीं होता तो हम गुरु से भरोसा खत्म कर लेते हैं। हम बच्चे की चाह रखते हैं अगर बच्चा पैदा न हो तो हम गुरु से भरोसा खत्म कर लेते हैं। बच्चा पैदा होता है और रोता है तब हम कहते हैं कि महाराज जी, आप इसे चुप कराएं।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि जो लोग गुरु से ऐसी आशाएं रखते हैं वे अपने घरों में ही रहें उन्होंने सन्तों से क्या फायदा उठाना है। 'नाम' जपने वाले और गुरु की आज्ञा का पालन करने वाले ही गुरु से फायदा उठा सकते हैं। अगर हमारी कोई आशा पूरी नहीं होती तो सेवक को यह समझना चाहिए कि मुझमें ही कोई कमी होगी। गुरु सेवक की हर बात सुनते हैं और मुनासिब मदद करते हैं।

***

किड्स कॉर्नर

महात्मा रविदास जी और मीरा बाई जी

बहुत पुरानी बात है, महात्मा रविदास जी छोटी जाति में हुए हैं। हिन्दुस्तान में तब जाति-पाति को बहुत अहमियत दी जाती थी और बहुत भेद भाव होता था। मेड़ता राज्य की रानी मीरा बाई के दिल में परमात्मा से मिलने का शौक जगा। वे काशी गईं और वहाँ अपने कुल के पंडितों से मिलीं। रानी ने उनसे परमात्मा से मिलने का तरीका पूछा लेकिन पंडितों का कोई भी जवाब रानी को तसल्ली नहीं दे सका।

जब किसी ने मीरा बाई को रविदास जी के बारे में बताया तो वे रविदास जी के पास गईं और उनसे नामदान प्राप्त किया। अभी वे काशी में ही थीं लेकिन पंडितों ने राजा को रानी के बारे में बहुत नफरत भरी बातें बताईं कि मीरा बाई की बुद्धि भ्रष्ट हो गई है, यह अच्छी बात नहीं है, उन्होंने एक छोटी जाति के इंसान को गुरु धारण किया है।

जब रानी काशी से घर वापिस आईं तो पंडितों की कही बातों के कारण उन्हें बहुत कष्ट दिए गए। आखिर एक दिन मीरा बाई ने रविदास जी से कहा, ''गुरुदेव, आप हमारे घर आकर अपने चरण डालें हमारे घर को पवित्र करें।'' प्यार तो प्यार ही होता है।

रविदास जी मीरा बाई के प्यार को देखकर उनके घर आए। जब खाना तैयार हुआ तो पंडितों ने विरोध किया कि मीरा बाई

का गुरु तो नीची जाति का है, अगर यह हमारे साथ खाना खाने बैठेगा तो हम खाना नहीं खाएँगे ।

उस समय बहुत छूआछूत थी कि इस नीची जाति के आदमी को छूना तक नहीं है। रविदास जी ने कहा, ''देखो बेटी, मैं तुम्हारी इज्ज़त बनाने के लिए आया हूँ, न कि गंवाने के लिए। अगर मेरे बैठने से कोई समस्या होती है तो मैं साथ में नहीं बैठूंगा। मैं दूसरी तरफ बैठकर खाना खा लूँगा, तुम इन्हें खिलाओ।''

जब पंडित खाना खाने लगे तब परमात्मा की ऐसी मौज हुई कि सब पंडितों को लगा कि रविदास जी उनके साथ बैठकर खाना खा रहे हैं। सब पंडित कहने लगे, ''अंधेर-अंधेर, रविदास हमारे साथ बैठा है, हमने कहा था कि इसे यहाँ मत बिठाओ।''

हिन्दुस्तान में अड़सठ तीर्थ और बारह शिलाऐं हिन्दुओं में बहुत ऊंची मानी जाती है कि उनके दर्शन और पूजा करनी चाहिए। निंदा करने वालों को उपदेश करते हुए रविदास जी कहते हैं, ''अड़सठ तीर्थ नहाने, बारह शिलाओं के दर्शन करने और पूजने के बाद भी अगर कोई निंदा करता है तो इन सबका फल निष्फल हो जाता है।''

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि सच्चे गुरु की कोई जाति नहीं होती। रीति-रिवाज और जाति तो हम इंसानों की बनाई हुई है। सच्चे गुरु को मानने में दुनिया की कोई परवाह नहीं करनी चाहिए, कोई शर्म नहीं करनी चाहिए। सच्चे गुरु ही हमारी हर समय मदद करते हैं, हमारे अंग-संग रहते हैं, ज़रूरत है तो उन पर पूर्ण रूप से विश्वास करने की। वे हमेशा अपने शिष्य की मुनासिब मदद करते हैं। ✻✻✻

पजल कॉर्नर

मैं कौन हूँ?

1 मैं आँखों से दिखाई नहीं देता लेकिन सिमरन करते समय मुझे याद किया जाता है। मैं कौन हूँ?

2 मैं परम पिता परमात्मा को प्यार से याद करने का तरीका हूँ। मैं कौन हूँ?

3 मैं बिना किसी स्वार्थ के दूसरों की मदद करती हूँ। मैं कौन हूँ?

4 मैं वह पवित्र बानी हूँ जो हमें परमात्मा की ओर ले जाती है। मैं कौन हूँ?

5 मैं शरीर नहीं हूँ, मैं परमात्मा की अंश हूँ। मैं कौन हूँ?

6 मैं वह गुण हूँ जिसमें हम घमंड छोड़कर नम्र बनते हैं। मैं कौन हूँ?

7 मैं वह मार्गदर्शक हूँ जो सबको परमात्मा के साथ जोड़ने के लिए संसार में आता है। मैं कौन हूँ?

8 मैं वह पवित्र पुस्तक हूँ जिसमें गुरुओं और सन्तों की बानी लिखी है। मैं कौन हूँ?

9 मैं वह शब्द हूँ जिसे याद करके मन को परम पिता परमात्मा की ओर लगाया जाता है। मैं कौन हूँ?

10 मैं वह हूँ जहाँ हम मिलकर परम पिता परमात्मा का नाम याद करते हैं और अच्छी बातें सीखते हैं। मैं कौन हूँ?

1–परमात्मा 2–सिमरन 3–सेवा 4–शब्द–धुन 5–आत्मा

6–नम्रता 7–गुरु 8–श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी 9–नाम 10–सतसंग

***

RNI No - RAJHIN/2003/9899

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज, 11 सितम्बर 1926

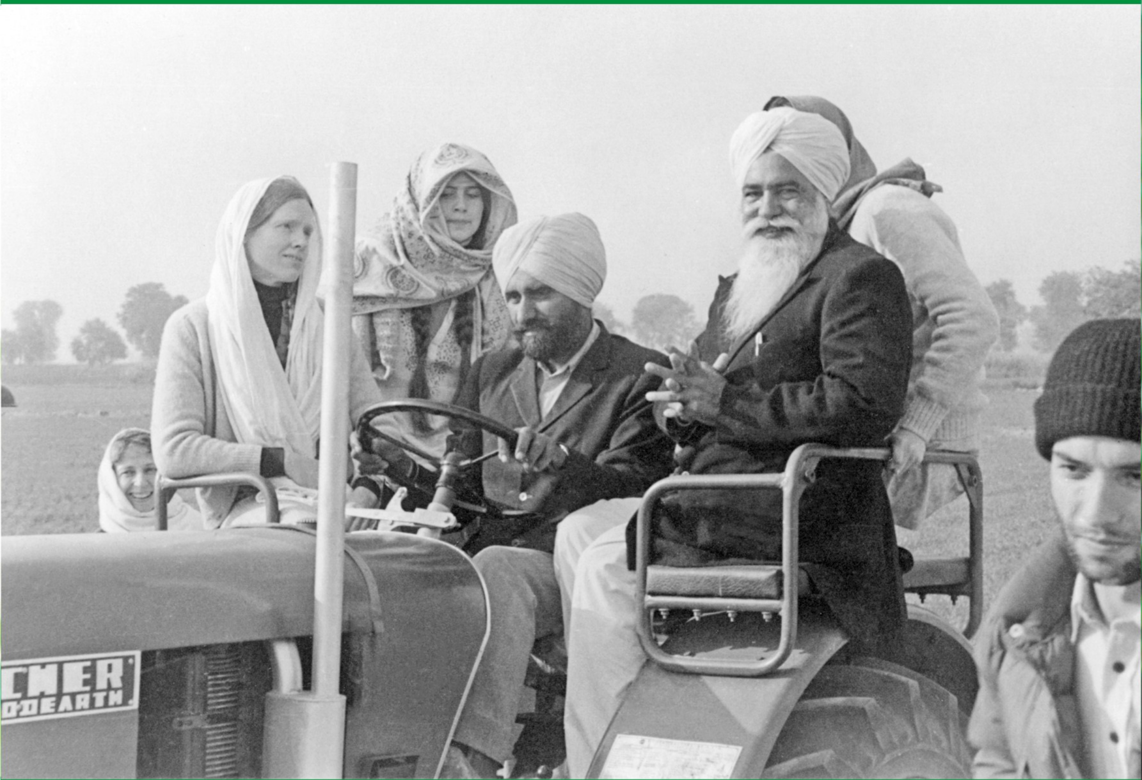

आप सदा ही गुरु को प्रेम-प्यार से याद करें। दुनिया के काम करते हुए गुरु को याद करें क्योंकि अंत समय में हमारी मदद न तो माता ने करनी है, न पिता ने करनी है, न समाज ने करनी है, न किसी हुकूमत या धन दौलत ने ही हमारी मदद करनी है। आप सोचकर देख लें अगर बिना मजदूरी, बिना मुआवजे कोई हमारी सेवा करते हैं तो वे हमारे प्यारे सतगुरु हैं।